प्रस्तावना

भाव तथा विचार को व्यक्त करने में भाषा एक माध्यम का कार्य करती है। इसी माध्यम स्वरूप भाषा मानव के मुख से निकलकर इच्छित ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था बन जाती है। यह सम्पूर्ण मानव समुदाय के भावों एवं विचारों को संप्रेषित करने वाली एक ऐसी विलक्षण शक्ति है, जो उनके भाव, विचार, अभिव्यंजना, मस्तिष्क एवं ह्रदय में बराबर विद्यमान रहती है और यह किसी भाषा या वाणी के माध्यम से ही व्यक्त होती है। भाषा के व्यवहार में सदैव ही एक व्यक्तिगत विशिष्टता रहती है। जो विभिन्न संदर्भो, स्थितियों और उद्देश्यों के आधार पर अलग-अलग प्रकार से भाषा का प्रयोग होता है। भाषा में यह विविधता और विषमता काल-विशेष, स्थान-विशेष, समाज विशेष, विद्या विशेष आदि के कारण पाई जाती है

जैसे –काल विशेष में पुरानी हिंदी, आधुनिक हिंदी अथवा छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि के हिंदी भाषा के रूप में तथा स्थान विशेष –अवधि, ब्रज, भोजपुरी, खाड़ी बोली आदि। समाज विशेष में शिक्षित और अशिक्षित, उच्च वर्ग और निम्न वर्ग आदि की शैली दिखाई देती हैं। व्यक्ति विशेष में गाँधी, नेहरू, निराला, पन्त, रामचंद्र शुक्ल आदि की विशिष्ट शैलियाँ मिलती हैं। विधा विशेष में कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य तथा हिंदी ग़ज़ल आदि में भाषा के अलग - अलग रूप मिल जाते हैं। इस प्रकार से मनुष्य की भाषा में जो विविधताएँ पाई जाती हैं उन्हें भाषा की शैलियाँ कहा जाता है। अर्थात, जब भावों और विचारों को भाषाई रूप दिया जाता है तभी शैली का जन्म होता है।

शैली का उत्पत्ति क्षेत्र भाषा विज्ञान में और कार्य क्षेत्र साहित्य में होता है। हांलाकि कुछ विद्वान् शैली को साहित्यशास्त्र या काव्यशास्त्र से भी जोड़ते रहे हैं, क्योकिं इसके कार्य का सीधा संबंध साहित्य से है। मगर इधर पिछले कुछ वर्षों में शैली भाषाविज्ञान की एक अपेक्षाकृत नई आलोचना–पद्धति के रूप में दिखाई

देती है , जो रचना की पूर्वाग्रहहीन, वस्तुनिष्ठ, व्यवस्थित भाषाई विश्लेषण कर उसके मूल मर्म और अर्थ को उजागर करती है।

भाषाविज्ञान, भाषा का विश्लेष्ण ही किया जाता है, जबकि शैली विज्ञान इससे और आगे गहराई में जाकर साहित्य के मार्मिक कथ्य की पड़ताल का दावा करता है। शैलीविज्ञान साहित्य को समझने - समझाने की एक दृष्टि है जो शैलीय प्रतिमानों के आधार पर एक ओर साहित्यिक कृति की संरचना (Structure) और गठन (Texture) पर प्रकाश डालती है तथा दूसरी ओर कृति का विश्लेष्ण करते हुए उसमें अंतर्निहित साहित्यिकता को उजागर करती है। अपने समय में वही साहित्य अपना प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें अपने समय के अंतर्द्वंद्वों, संघर्षों, परिवर्तनों तथा नए सामाजिक – सांस्कृतिक वातावरण को समझने और व्यक्त करने की क्षमता होती है। अपने समय के ज्ञानात्मक, संवेदनात्मक एवं सृजनात्मक बोधों को आत्मसात करती हुई समाज के सर्वाधिक संघर्षशील व् चेतनासंपन्न हिस्सों की आवाज बनती है। अवाम की यह आवाज़ स्वयं को व्यक्त करने के लिए सर्वाधिक सशक्त माध्यम विधा, छंद व भाषा का चयन करती है। साहित्य के क्षेत्र में हिंदी ग़ज़ल में ये तमाम खूबियाँ मौजूद रही है। हिंदी ग़ज़ल समर्थ विधा के रूप में हिंदी साहित्य में अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करते हुए एक लंबी परम्परा से चली आ रही है। आदिकाल में अमीर खुसरो, मध्यकाल में कबीर और आधुनिक काल में भारतेंदु, प्रसाद, निराला, त्रिलोचन, शमशेर जैसे हिंदी कवि शामिल है। अपनी सृजनात्मकता के निरंतरता से हिंदी ग़ज़ल को कविता की स्वतंत्र विधा के रूप में सुदृढ़ करने का कार्य आधुनिक हिंदी ग़ज़ल सम्राट के रूप दुष्यंत कुमार ने किया। दुष्यंत कुमार ने अपने समय के सबसे तीखे अंतर्विरोधों को, उनके दंशों को समझा, गहराई तक महसूस किया और उससे उत्पन्न बेचैनी को अवाम की पीड़ाओं के साथ जोड़ते हुए अपनी ग़ज़लों के जरिये व्यक्त किये। दुष्यंत स्कूल के बाद जो युग आता है उसे हम डॉ कुँवर बेचैन स्कूल के नाम से पुकारते है और यह न्यायपूर्ण भी लगता है। इनकी ग़ज़लों से यह स्पष्ट होता है कि ये पाठकों को नयी प्रेरणा देने का

कार्य किया है। शैलीवैज्ञानिक अध्ययन की प्रक्रिया में भाषिक स्तरों पर शैली विश्लेष्ण प्रतिमानों का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध का मूल उद्देश्य हिंदी ग़ज़ल में डॉ कुँवर बेचैन की ग़ज़लों का भाषाई विश्लेष्ण कर उसमें अभिव्यक्त मर्म के ताने-बाने को रेखांकन करना है। इस मायने में भी यह शोध काफी सार्थक और महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है कि "महावर इन्तजारों का" ग़ज़ल संग्रह, जो अपने समकालीन हिंदी ग़ज़ल साहित्य में एक साकारात्मक सोच स्थापित करने वाला प्रतिबद्ध साहित्य होते हुए भी किस प्रकार से हाशिए पर रहा है, । भाषा के अंतर्गत शैली एक चयन है जो हमेशा एक विकल्प देती है इसलिए प्रस्तुत कृति ('महावर इंतजारों का') का भाषा चयन के आधार पर विश्लेषित करना है। इस शोध में विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक, एवं समीक्षात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा। सन्दर्भ तथा प्रसंग के अनुसार अन्य शोध प्रविधियों का भी उपयोग किया जायेगा।